बोध-वाक्य

समानो मंत्रः	(अथर्व वेद ६.६४.२)
समितिः समानी	हे बंधुओं! हमारे विचार
समानं व्रतं	समान हों । हमारी सभा
सहचित्तमेषाम् ।	सबके लिए समान हो । हम
समानेन वो	सबका संकल्प एक समान
हविषा जुहोमि	हो । हम सबका चित्त एक
समानं चेतो	समान भाव से भरा हो । एक
अभिसंविशध्वम् ॥	विचार होकर अपने कार्य में एक मन से लगे । इसीलिए हम सबको समान मौलिक शक्ति मिली है ।

केशवसृष्टि समाचार

मासिक

वर्ष १०, अंक ३ मूल्य रु. १०/-

मार्च २००९ वार्षिक रु. ५०/-

संपादक : महावीर प्रसाद शर्मा

कार्यकारी संपादक : लक्ष्मण गुप्ता, शोभाताई थिटे

संपादक मंडल : विजयालक्ष्मी सामवेदी, सत्यदेव बंका, जगदिश्चंद्र पाटील।

कार्यालय : केशवसृष्टि, उत्तन, भाईंदर, जि. ठाणे.

दूरभाष : २८४५०२४७, २८४५२८५५

यह पत्रिका मुद्रक एवं प्रकाशक सुरेश भगेरिया द्वारा केशवसृष्टि के लिए **युनिटी आर्ट ऑफसेट** ३०२, वडाला उद्योग भवन, वडाला, मुंबई - ३१ से मुद्रित और केशवसृष्टि, उत्तन, भायंदर, जि. ठाणे से प्रकाशित हुई है.

अंतरंग .....

कार्यवाह की कलम से ४

शिलान्यास समारोह ५

12th Annual Function ६

दापोली कृषि विश्वविद्यालय ११

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था १२

वक्तृत्व और संवादकुशलता १३

श्रीगुरुजी : दृष्टि और दर्शन १४

जीवन की प्रयोगशालाः वानप्रस्थाश्रम १५

ध्येयवाद और सामाजिक बंधुत्व १७

संपादकीय

रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी के महासंचालक श्री विनय सहस्त्रबुद्धेजी का हार्दिक अभिनंदन। राजनीतिशास्त्र जैसे सामाजिक एवं राष्ट्रीय दृष्टी से महत्त्वपूर्ण विषय का गहन अध्ययन कर राजनीति तथा राजनेताओं को समाजाभिमुख बनाने हेतु आवश्यक योजनाओं का सुझाव देनेवाला प्रबंध लिखकर उन्होंने एक नया आयाम प्रस्थापित किया है। श्री विनयजी के इस अभिनव प्रयास की सराहना करते हुए मुंबई विश्वविद्यालय ने उन्हें डॉक्टरेट से सम्मानित करना यह केशवसृष्टि परिवार के लिए गर्व की बात है।

केशवसृष्टि के प्रकल्पों की सराहना और चर्चा आज हर जगह होती है। कार्यकर्ताओं की दूरदृष्टी, योग्य नियोजन और कर्तव्यकर्मठता की वजह से सभी प्रकल्प सफलतापूर्वक आगे बढ़ रहे हैं। रामरत्ना विद्यामंदिर शिक्षा क्षेत्र में अपना नाम प्रस्थापित कर रहा है। विविध शैक्षणिक एवं क्रीडा तथा सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में रामरत्ना विद्यामंदिर संस्था का नाम रोशन कर रहा है।

रामरत्ना विद्यामंदिर के बढ़ते कदमों को और अधिक सक्षम बनाने हेतु विविध योजनाएं चल रही हैं। विद्यालय की बढ़ती हुई विद्यार्थी संख्या को ध्यान में रखकर नए छात्रावास के निर्माण की योजना बनायी गई। योजना बनते ही सामाजिक सहयोग मिलना प्रारंभ हुआ। नये छात्रावास के लिए भायंदर निवासी श्रीमती गायत्री देवी ढढानिया जी ने अपने पति स्व. विश्वनाथजी ढढानिया की स्मृति में छात्रावास निर्माण हेतु रु. २१ लाख का अनुदान दिया। दिनांक १४ फरवरी २००९ को छात्रावास का शिलान्यास किया गया। आश्चर्य की बात तो यह है कि इस शिलान्यास समारोह में सम्मिलित अभिभावक श्री आलोक अग्रवाल जी ने छात्रावास निर्माण में सहयोग हेतु रु. २१ लाख देने का आश्वासन दिया!

संस्कृति संवर्धन प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित प्रतियोगिता में रामरत्ना विद्यामंदिर के छात्र अक्षत जैन ने सभी ८० हजार सहभागियों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। कुमार अक्षय जैन का हार्दिक अभिनंदन।

केशवसृष्टि के सभी प्रकल्पों की सफलता का एकही मंत्र है 'परस्पर विश्वास एवं सहयोग।' समय समय पर सभी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की चिंतन बैठक होती है। संस्था के विकास हेतु सभी कार्यकर्ता अपना अनुभव तथा समय प्रदान करते है।

भविष्यकालीन योजनाओं को मूर्तस्वरूप देने के उद्देश्य से रविवार दि २२ मार्च २००९ को केशवसृष्टि तथा सभी सहयोगी संस्थाओं के कार्यकर्ताओं की चिंतन बैठक का आयोजन केशवसृष्टि में होनेवाला है।

केशवसृष्टि समाचार के आप सभी पाठक हमारे शुभचिंतक हैं। हमारा आपसे अनुरोध है कि आप भी समय समय पर आपके अमूल्य सुझाव देकर हमें सहयोग करें। और राष्ट्रनिर्माण के इस यज्ञ में सहभागी बनें।

संपादक

कार्यवाह की कलम से...

पर्यावरण और स्वास्थ्य

केशवसृष्टि का परिसर पर्यावरण की दृष्टि से आदर्श लगता है। आजकल पाठशालाओं में पर्यावरण का विषय अनिवार्य हो गया है। छात्रों को पर्यावरण का महत्त्व समझाने के लिए उन्हें किसी ऐसे जगह पर ले जाते हैं, जहां नैसर्गिक वायुमंडल हो और छात्र उसका अनुभव कर सकें। कई पाठशालाएं इसी उद्दिष्ट से केशवसृष्टि में पधारते हैं।

प्रकृति अत्यंत उदार है। वह अपनी संपदा प्राणिमात्र के लिए लुटाती है। हमारा जीवन प्रकृति के उपभोग से ही विकसित होता है। हमें प्रकाश, शुद्ध हवा, निर्मल पानी और संतुलित भोजन आदि प्रकृति से ही मिलता है। लेकिन हम प्रकृति को क्या देते हैं? अपने पाठशाला में छात्र एक भावपूर्ण गीत गाते हैं..... देश हमें देता है सबकुछ। हम भी तो कुछ देना सीखें। यहां देश के स्थान पर प्रकृति यह शब्द कहें, तो उससे भी गहरा अर्थ प्रतीत होता है। प्रकृति का समुचित उपयोग करते हुए हम प्रसन्न और दीर्घजीवी बन सकते हैं। किंतु प्रकृति के अत्यधिक दोहन से और उन्मुक्त भोग से हम कई समस्याएं पैदा करते हैं। फिर उन समस्याओं को सुलझाने के लिए हमें तैयारी करनी पड़ती है। ग्लोबल वॉर्मिंग का जो गंभीर विषय आज जगह जगह पर चर्चित हो रहा है, उसका अगर मूल कारण देखा जाए तो प्रकृति का शोषण ही है। उपभोग में संयम की बात करनेवाली हमारी संस्कृति को कौन मानता है? हम स्वयम् नाही मानते तो औरों को कैसे बताएं? इसलिए जब पाठशालाओं के छात्र पर्यावरण की बात सीखने के लिए अपने यहां आते हैं, तो आशा की एक किरण दिखाई देती है।

हमें यह सोचना चाहिए कि छात्रों का दिशादर्शन कैसे हो? आज विकास की मान्यताएं ऐसी बन गई है कि विश्व में संयमित उपभोग का लक्ष्य ही नहीं रहा। लोग अधिक से अधिक भोगना चाहते हैं। कुछ लोग ऐसा भी सोचते हैं कि भोग की वस्तुओं का इतना अधिक उत्पादन हो कि हवा और पानी की तरह सबको बिनाशुल्क उपलब्ध हों। क्या यह संभव है? ऐसे जीवन से तो हवा और पानी भी शुद्धता खो बैठेंगे।

आज पूरा विश्व वायू, जल, खाद्य, भूमि और ध्वनि के प्रदूषण से व्याप्त हो रहा है। इन प्रदूषणों की जानकारी मात्र टीव्ही के पडदे पर देखने से या पुस्तकों में पढ़ने से नहीं मिल सकती। अच्छी चीजों को प्रत्यक्ष रूप से देखने से ही यह जानकारी मिल सकती है। यही जानकारी केशवसृष्टि का परिसर भ्रमण करने से प्राप्त होती है। छात्रों को सरल भाषा में अगर हम समझा सकें तो पर्यावरण की रक्षा के लिए अगली पीढ़ी तैयार हो सकती है। अपने राष्ट्रीय दायित्व को निभाते हुए केशवसृष्टि से पर्यावरण के वैश्विक दायित्व को भी निभाने का एक अवसर हमें प्राप्त हुआ है। हम सब मिलकर अपने कर्तव्य को पूरा करें यही मानवसेवा होगी।

– ***सतीश सिन्नरकर*** – कार्यवाह, केशवसृष्टि ■

रामरत्ना विद्यामंदिर के नए छात्रावास का शिलान्यास समारोह

उत्तनविविधलक्ष्यी शिक्षण संस्था द्वारा संचालित रामरत्ना विद्यामंदिर के छात्रावास क्रमांक ६ का शिलान्यास शनिवार, दिनांक १४ फरवरी, प्रातःकाल ११ बजे संपन्न हुआ। इस समय विद्यालय में ४५० छात्र विद्याध्ययन कर रहे हैं। छात्रों की बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए ५४००० वर्गफिट के एक नए छात्रावास के निर्माण की योजना बनाई गई।

मंत्रोच्चारण के साथ पं मुकुटधर पांडे जी ने श्रीमती गायत्रीदेवी ढाढनिया के करकमलों से विधिपूर्वक शिलान्यास करवाया। भायंदर-निवासी श्रीमती गायत्री देवी ढढानिया ने अपने स्व. पति विश्वनाथ जी ढढानिया की पुण्यस्मृति में २१ लाख की धनराशि भेंट की। इस घोषणा के पश्चात तुरंत ही अभिभावक श्री आलोक अग्रवाल परिवार ने छात्रावास के निर्माण के लिए २१ लाख रु. देने की घोषणा की।

सर्वश्री विमल केड़िया जी, अशोक गोयल जी, सुरेश भगेरिया जी, विलास भागवत जी आदि न्यासीगण, अभिभावक प्रतिनिधी एवं प्रधानाचार्य श्रीमती अनीता साहू की उपस्थिति में कार्यक्रम संपन्न हुआ। श्री सुरेश भगेरिया जी ने नए छात्रावास के संबंध में जानकारी दी। कार्यक्रम को सूत्रबद्ध करने का कार्य विजयलक्ष्मी सामवेदी द्वारा किया गया। श्री सुरेश ओभान जी ने कार्यक्रम की व्यवस्था का संपूर्ण कार्यभार संभाला। ■

संस्कृति संवर्धन प्रतिष्ठान

संस्कृति संवर्धन प्रतिष्ठान, मुंबई द्वारा आयोजित नैतिक शिक्षा योजना २००८-२००९ के अंतर्गत लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया। इस योजना में ३८१ विद्यालयों के ८०००० छात्रों ने भाग लिया। रामरत्ना विद्यामंदिर के कक्षा ४ थी से ८वीं तक के छात्रों ने इस परीक्षा में भाग लिया।

अपार हर्ष का विषय है कि अधिकतम छात्रों ने ५०% से अधिक अंक अर्जित किए। ऐसे सभी छात्रों को विशेष प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। हमारे लिए गौरव का विषय है कि विद्यालय के छात्र **अक्षत जैन** ने सभी छात्रों में प्रथम स्थान प्राप्त किया। **नीलांश बटाविया** व **कुणाल पटेल** ने द्वितीय तथा **राहुल तिवारी** एवं **विष्णु सदानी** ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इन छात्रों को रविवार, दि. १ मार्च २००९ को प्रातः साढ़े नौ बजे यशवंत नाट्यमंदिर, माटुंगा, मुंबई में सम्मानित किया गया। विद्यालय के **संस्कृत शिक्षक पं. कृष्णकांत पांडेजी** को **आदर्श शिक्षक पुरस्कार** से सम्मानित किया गया।

विनय सहस्रबुद्धे यांना पी.एच.डी

गेली २१ वर्षे रामभाऊ म्हाळगी प्रबोधिनीशी संबंधित असलेले प्रबोधिनीचे महासंचालक विनय सहस्रबुद्धे यांना मुंबई विद्यापीठाने राज्यशास्त्रातील त्यांच्या अभ्यास प्रबंधाला मान्यता देऊन पीएचडी दिली आहे. **लोकानुरंजन आणि निवडणुकीच्या राजकारणाच्या सापळ्यातून राजकीय पक्षांना बाहेर काढण्यासाठीच्या उपाययोजना** या विषयावरील आपला प्रबंध त्यांनी मार्च २००८ मध्ये मुंबई विद्यापीठाला सादर केला होता. एस.आय.ई.एस.महाविद्यालयातील राज्यशास्त्र विभागाच्या प्रमुख डॉ. मनीषा टिकेकर या त्यांच्या मार्गदर्शक होत्या. या आधी १९९८-९९ मध्ये सहस्रबुद्धे यांना रोटरी इंटरनॅशनल रोटरी अँबसॅडोरियला पाठ्यवृत्ती मिळाली होती व त्यांनी **जगभरातील राजकीय पक्षांच्या ऱ्हास प्रक्रिये संदर्भात** अमेरिकेतील इलिनॉय विद्यापीठात सुमारे आठ महिने राहून अभ्यास केला होता.

12th Annual Function of Ram Ratna Vidya Mandir

Ram Ratna Vidya Mandir, a project under Uttan Vividh Lakshyee Shikshan Sanstha, celebrated its 12th Annual Function on 18th January, 2009. It was an event of joy and achievement. The chief guest of the day was Shri. Manoj Joshi, the famous film, television and theatre actor best known for his comic roles in films like Hulchul, Bhulbhulaiya, Golmaal and Phir Hera Pheri.

The event was really a special one as it was dedicated to the Srishti of Keshav Baliram Hedgewarji - 'Keshav Srishti'. Cultural events were based on Keshav Srushti to make the people aware about the aim and objectives behind Keshav Srishti and it's work for the benefits of society. This was a bold step-taken up as a challenge by all the teachers and students. The program was a great success due to nearly 100% participation and efforts of our talented students.

Program started with Saraswati Punaj and deep prajwalan after which Annual Report of the School was read by the School Chairman Shri. Mahendraji Kabra. He expressed that academic achievement and excellence shown by the students this year was worth appreciating. Meritorious students and efforts of the concerned subject teachers itself is the strength of the school. While talking about future plans he said that, the Vidyalaya Management Committee has decided this year to extend the school building and hostel. The students and the teachers who brought laurels to the school were felicitated in the Prize Distribution Ceremony. The presence of the chairman Shri.

Mahendraji Kabra and Vice Chairman Shri. Arvindji Rege along with their family members as well as other trustee members was an encouraging factor for the staff and students throughout the program.

Cultural program started with Ganesh Vandana as a tribute to God at the beginning.

Introduction to the Keshav Srushti was given by Smt. Vijayalaxmi Samvedi, head of Hindi-Sanskrit Department. After whcih, 'Rhythm Scap', an excellent blending of vocal and instrumental music was a good treat for the ears. The Film Division Master Piece 'Anekta Mei Ekta' was the musical skit which was performed by junior group of boys from the school in a very joyful manner. English skit was based on Rambhau Mhalgi Probodhini portraying the various activities undertaken by it. Then our little wonders of music sang a Hindi Devotional Song. Essence of India was reflected in the various dance performance like- Gujarathi, Punjabi, Bengoli and fusion. Audience were enthralled by the magnificient energy level and graceful performance of the students.

Apart form academics, the achool develops moral values and social consciousness among the pupil. To provide quality education that blends rich bharatiya cultural values so as to make responsible citizens of tommorrow was the theme of Hindi skit. Upliftment and social welfare of under priviledged along with respect for elders was shown therein. Sanskrit skit was based on various projects like Vanaprasthashram, Ram Ratna Vidya Mandir and Gaushala run by Keshav Srushti. The Sanskaras that we imbibe in the school as well as moral values and ethics like reverence for cow as Gaumata in Hindu culture was reflected in the skit. Universla brotherhood in cultural diversity was the message in the English song - 'Notes of Love' compeering was done by Master Dikesh Ghaghda (English) and Master Vaibhav Lukhi as well as Master Rishabh Agarwal (Hindi) which proved to be very lively.

Annual day function was a grand success which was highly appreciatd by the chief guest as well as the audience. In the speech given by Mr. Manoj Joshi, the chief guest he mentioned with enlightened spirit that, it was the first time he visited a residential school, which is a distinct one. The energy level of the students is seen by the participation and academic achievement which leads to optimum utilization of their energy. He even mentioned that the pupil stay away from their parent but they can make them feel proud as well as to the society by creating a strong bond among themselves with overall development in their personality.

To share thougths and to sustain lovign relationship with school, Alumni were also invited for a meet for cherishing their memories of the school days. It was a wonderful experience for them. At the end, school principal Smt. Anita Sahu who is the source of inspiration and guidance for all of us expressed her gratitude as a vote of thanks to the dignitaries, parents, alumni and all the memebrs of Ram Ratna Vidya Mandir family. She encouraged the pupil and all the teachers for their hard-work, initiative and sincere involvement for making the event successful.

Ms. Anagha Prabhu
Accounts Teacher.

SIP PRODIGY - 2009 PUNE

4th Regional Sip Abacus and Brain GYM Competition

Students of Ram Ratna Vidya Mandir participated in 4th regional sip abacus and brain gym competition on 15th Feb 2009 at Pune.

Competition was held at Chattrapati Shivaji Stadium at Balewadi Pune.

Nearly 3500 students had participated.

Majority of the students were from Pune, Mumbai, Nashik, Aurangabd, Nagpur and different places from Maharashtra.

From our school Ma. Akash Singh of 4th level bagged 2nd level runner up award with certificate.

For our students it was very new experience to participate in such type of competitions where at present 3500 students are sitting for a competition and they have to solve 120 calculation problems in 5 minutes.

Our students performed well in competition and even now they understood exact criteria of the exam as well as they got motivation from this competition.

Date : 17/02.09

Shivaji Patil
Ram Ratna Vidya Mandir
Keshav Srrushthi Uttan Bhayander (W)

World Suryanamskar Day Celebration At Ram Ratna Vidya Mandir

RRVM Sports Department conducted Suryanamaskar competition on 2nd February 2009 that is Rathasaptami World Suryanamaskar day. Total Suryanamaskar Ahuti on Rathasaptami occasion was 13658 done by 66 competitors. Grand Total Ahuti was 17337 by 349 Student of RRVM Keshav Srushti. Students were awarded by the Principal Mrs. Anita Sahu.

Age Group Under 12 yers boys

Name of Student	Class	GR	House	Suryanamaskar's	Total	Position
Shubham Bal	VIA	1034	Pawak	13+501	514	Gold Medal
Monish Shah	VIA	1080	Sameer	13+490	503	Silver Medal
Prem Pathkar	V	992	Sameer	13+478	491	Bronze Medal
Rakshit Jeevani	V	1029	Kshiti	13+424	437	4th
Rushit Singhania	V	1216	Neer	13+338	351	5th

Age Group Under 14 yrs boys

Name of Student	Class	GR	House	Suryanamaskar's	Total	Position
Nilanjan Sinha	VIII	1072	Gagan	13+501	514	Gold Medal
Monil Nishan	VII	980	Sameer	13+393	406	Silver Medal
Dakshish Pancholi	VIII	1140	Gagan	13+388	401	Bronze Medal
Gemant Patel	VII	1188	Gagan	13+380	393	4th
Chinmay Solanki	VIII	1075	Pawak	13+378	391	5th

Age Group Under 19th yrs boys

Name of Student	Class	GR	House	Suryanamaskar's	Total	Position
Darshan Shah	IX C	924	Gagan	13+212	225	Gold Medal
Aman Agarwal	IX A	1251	Neer	13+98	111	Silver Medal
Rachit avla	XI Com.	514	Pawak	13+51	64	Bronze Medal

By C. B. Yadav, HOD Sports

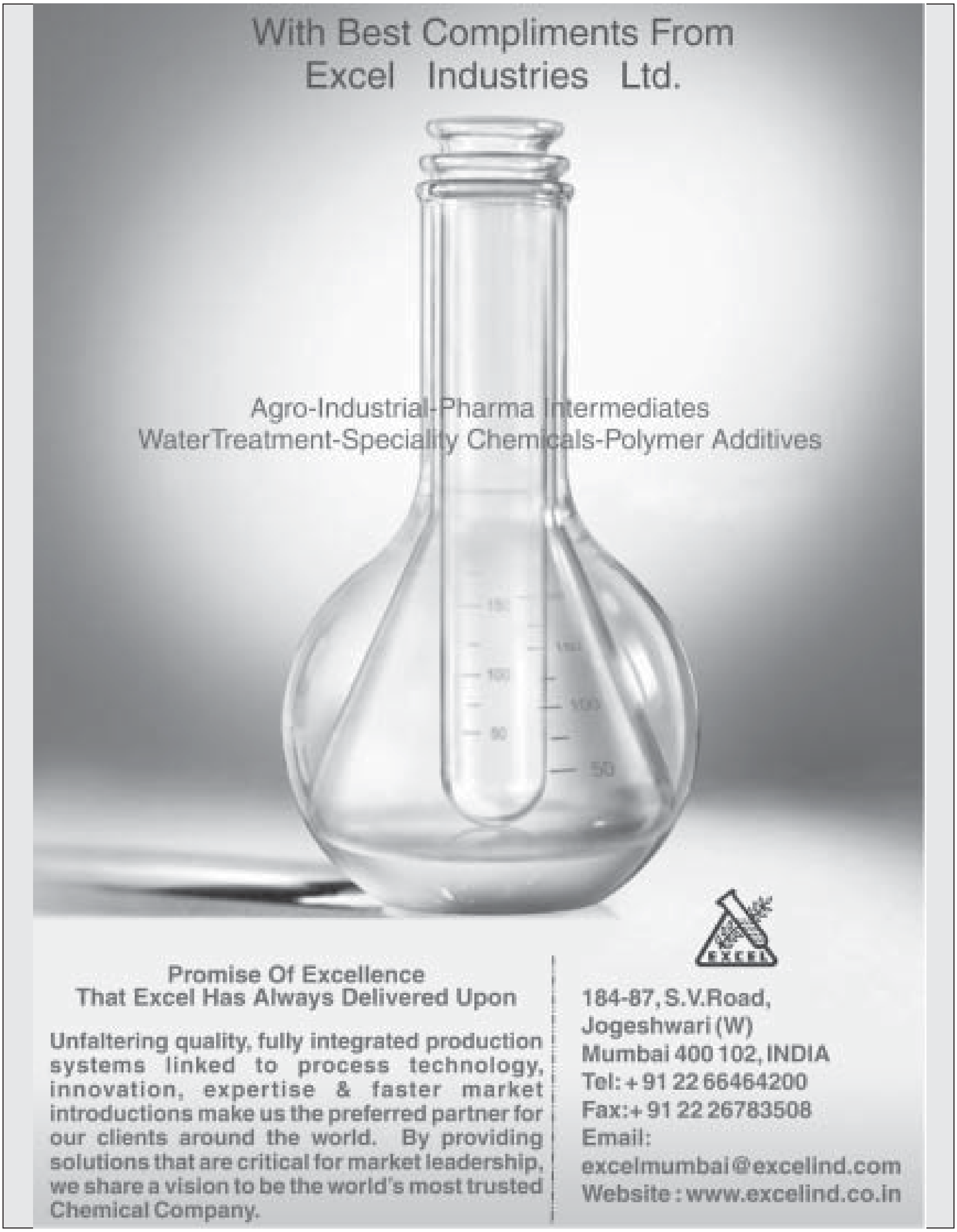

With Best Compliments From
Excel Industries Ltd.
Agro-Industrial-Pharma Intermediates
WaterTreatment-Speciality Chemicals-Polymer Additives
Promise Of Excellence
That Excel Has Always Delivered Upon
Unfaltering quality, fully integrated production systems linked to process technology, innovation, expertise & faster market introductions make us the preferred partner for our clients around the world. By providing solutions that are critical for market leadership, we share a vision to be the world's most trusted Chemical Company.
184-87, S.V.Road,
Jogeshwari (W)
Mumbai 400 102, INDIA
Tel: + 91 22 66464200
Fax:+ 91 22 26783508
Email:
excelmumbai@excelind.com
Website : www.excelind.co.in

Mahashivratri in RRVM

Feb 23rd Monday, the students along with the entire family of Ram Ratna Vidya Mandir celebrated Mahashivaratri festival in a grand manner. All students had worn white kurta and pyjama and during the morning assembly students chanted mantras & shlokas of Lord Shiva.

This festival is celebrated every year on the 13th or 14th day in the Krishna Paksha of the month of Phalgun (some where around Feb or March).

This is the day of reunion of Lord Shiva and Parvati. The story says that the King Daksha opposed Sati's marriage with Lord Shiva. At a yagna (holy sacrifice) the king ignored Shiva's presence and thereby insulted him publicly. Sati was so angered by this that she jumped into the sacrificial fire and ended her life. Lord Shiva unleashed his fury at the death of his wife by performing the violent dance, Tandava. He wiped out Daksh's kingdom, undertook rigorous penance and retired to the Himalayas. The gods, who feared that the severity of Shiva's penance might bring an end to the world, revived Sati in the new avatar of Parvati. Shiva-Parvati married and this reunion is celebrated on Maha Shivaratri.

At 11:30 am students, teachers and the entire staff visited the Lord Shiva Temple which is near Vanprasthashram.

Everybody performed puja and chanted mantras, bhajans of Lord Shiva. Students expressed devotion towards Lord Shiva by Chanting the mantra 'Om Namah Shivaya'.

Then students went to the mess and had light and delicious food which was specially prepared for the day.

In this way the entire Ram Ratna family offered their prayers to the Lord Shiva and the cultural and religious fervour of Mahashivratri was kept up..

Mrs. Hemlata Pawar
Mathematics Department.

FMM - TEACHER TRAINING PROGRAMME

RRVM always believes in continuous training. The Commerce teachers of Ram Ratna Vidya Mandir attended a training programme of Financial Market Management (FMM), CBSE-NSE Joint Certificate Programme which was held at BIFM, New Delhi on 16th Feb. to 21st Feb., 2009, to give proper exposure to the CBSE teachers for implementation of the course in class XII.

The programme was inaugurated by Mr. G. C. Sharma, Director of BIFM. The concept which were shared are Advance Theory of Financial Markets-2, Accounting for Business-2 & Business Process Outsourcing Skills.

Training the trainers in this way provides expanded horizons to explore their studies and understanding in modern way, to take up the challenges of the future, in tomorrow's competitive world.

- By Commerce Team.

एक शाम मुंशी प्रेमचंद के नाम

२३ फरवरी २००९ को रामरत्ना विद्यामंदिर ने रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी के सभागृह में प्रेमचंद की कहानियों का नाटकों के रूप में मंचन का आयोजन किया। यह कार्यक्रम 'आइडियल ड्रामा' संस्था की ओर से प्रस्तुत किया गया। इस संस्था के संस्थापक निदेशक श्री मुजीब खान जी द्वारा तीन नाटकों की प्रस्तुति की गई। जीवन-मूल्यों पर आधारित इन नाटकों ने छात्रों को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुजीब खान जी ने प्रत्येक नाटक के पश्चात बच्चों से प्रश्न पूछकर नाटकों के प्रभाव को परखा। कार्यक्रम के साक्षी सभी ट्रस्टीज् ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को जीवंत बनाया। परमपूज्य बापूजी श्री रामेश्वरदयाल जी काबरा ने मुजीब खान जी को सम्मानित किया तथा उनके इस प्रयास की भूरि-भूरि प्रशंसा की। विद्यालय के उपाध्यक्ष श्री अरविंद रेगे जी ने प्रतिवर्ष इस कार्यक्रम को कराए जाने की अनुशंसा की।

- विजयलक्ष्मी सामवेदी

दापोली कृषि विश्वविद्यालय द्वारा केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय का मूल्यमापन

डॉ. बा. सां कोकण कृषि विद्यापीठ दापोली अंतर्गत केशवसृष्टी कृषि तंत्र विद्यालय में गुरुवार दि. १२-२-२००९ को कृषि विद्यापीठ के तीन सदस्यीय तज्ञ मूल्यमापन समिति के डॉ. एच. के. पाटील (सहयोगी अधिष्ठाता), डॉ. एल.एस. चव्हाण. (प्राध्यापक), डॉ. एस. बी. भगत, (प्राचार्य - कृषि तंत्र विद्यालय रोहा इन्होंने इस संस्था को भेट की। उन्होंने विद्यालय की भौतिक सेवा-सुविधायें, इमारत, कार्यालय का कामकाज, प्रयोगशाला, ग्रंथालय, संस्था की जमीन (प्रक्षेत्र) कृषि और फलोद्यान प्रक्षेत्र, रोपवाटीका, तांत्रिक मनुष्यबल, और बाकी के अनुसंधानों की जांच की। विद्यापीठ के मार्गदर्शक तत्वों के अनुसार विद्यालय का कामकाज, लेखा परीक्षण अहवाल, मासिक अध्यापन, विद्यार्थियों के मौजूदगी पत्रक, सभी जरूरी रजिस्टर्स की जांच कर संतोष व्यक्त किया और केशवसृष्टि की सभी सहयोगी संस्थाओं को भेट की। विद्यालय के प्रक्षेत्रों पर लगाई हुई फलबाग, सब्जिया, रोपवाटिका, खुशबूदार तथा औषधी पेड-पौधों के क्षेत्र का अवलोकन किया।

विद्यालयने के प्रक्षेत्रों पर लिये गये, आंतरवासिता कार्यक्रम (कृषि से जुड़े उद्योग) केचुंवा खाद/ कंपोस्ट खाद निर्मिती, लॅण्डस्केप गार्डनिंग, जलसिंचाई क्षेत्रों का विकास, रोपवाटीका व्यवस्थापन, ठिंबक सिंचन का निर्माण, देखभाल तथा उसे बनाना इन सारे प्रकल्पों की जानकारी संस्था के कार्यवाह श्री. प्रकाश राजाध्यक्ष और विद्यालय के प्राचार्य श्री. सदानंद सामंतने दी। समिति सदस्योंने विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनसे वार्तालाप किया।

> केशवसृष्टि बहुत सुंदर! छोटे बच्चे, शैक्षणिक विद्यार्थी, बड़े-बूढ़ों सभी के लिए अतिरम्य, निसर्ग से भरपूर और जानकारी से परिपूर्ण वातावरण है, जीवन में कम से कम एक बार तो यहां आकर निसर्ग द्वारा प्रदत्त वरदान को अनुभव करना चाहिए ही।
>
> **सुप्रिया प्रकाश निकम**, मुलुंड (पूर्व), मुंबई

ॐ

केशवसृष्टी गोशाला

केशवसृष्टी गोशाला में पधारें, गोमाता की सेवा करें, गोवंश के सहवास में मानसिक शांति एवं अलौकिक आनंद प्राप्त करें। यह शास्त्र संमत मान्यता है कि गाय की सेवा करने से पुण्य की प्राप्ति होती है।

निम्नलिखित विविध प्रकार के दान करके आप गोशाला के आधारस्तंभ बन सकते है।

- एक दिन के यजमान रू. ११,०००/-
  (गोशाला का एक दिन का व्यय वहन करना।)
- एक समय गोशाला की सभी गायों को पंचखाद्य लड्डू खिलाना रू. ११००/-
- मासिक गोग्रास दान रू. ११००/-
- सवत्स गोदान (अधिक जानकारी के लिए गोशाला कार्यालय में संपर्क करें)

गोसेवा में सदैव, आपके कृपाभिलाषी

गोसेवा परिषद

प्रमुख कार्यालय :
३६, फिरोजा मॅन्शन, दूसरा माला, ग्रांन्ट रोड पूर्व स्टेशन के सामने, ग्रांन्ट रोड, मुंबई- ४०० ००७.
दूरभाष : २३०९ ४३०६, ३०९१ ७३५०, फैक्स : २३०९ ६०२७

गोशाला :
केशवसृष्टी गोशाला, उत्तान गाँव, गोराई रोड, भाईन्दर पश्चिम, पिन कोड : ४०११०६ जिला ठाणे, महाराष्ट्र.
दूरभाष : २८४५ १०३१, २८४५ ०२५३

|| गवा ग्रासप्रदानेन स्वर्गलोके महीयते ||

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था के बहुपयोगी उत्पाद

उत्तन जास्वंद तैल

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था के आयुर्वेदिक उत्पादन विभाग में कुल तेरह आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण किया जाता है। यहां की नर्सरी में लाल रंग के जास्वंद के फूल अधिक मात्रा में हैं। इन्हीं फूलों से उत्पन्न जास्वंद तैल का निर्माण यहां किया जाता है।

उत्तन जास्वंद तैल –

पॅकिंग – १०० मिली, मूल्य रु. ४५ मात्र।

घटक द्रव्य –

जास्वंद पुष्प – यह केश्य है। इसीकारण बाल बढ़ाने में उपयुक्त है। बाल सफेद होने से रोकता है।

कपुरकाचरी – यह सुगंधीद्रव्य है। त्वक्रोगनाशक है।

नागरमोथा – रक्तविकार, त्वक्विकार नष्ट करता है।

अनंतमूल – रक्तशोधक और त्वक्रोगनाशक है।

वाला (खस) – यह सुगंधी द्रव्य है।

नटामांसी – बालों की वृद्धि करता है। त्वक् रोगनाशक, त्रिदोषनाशक है।

गुलाबकली – वर्णप्रसादकर त्रिदोषनाशक है। रक्तविकार नाशक है।

तगर – यह त्वक्रोगनाशक है।

उपयुक्तता – यह तैल से हररोज बालों की जडों को मालिश करने से बालों की वृद्धि होती है। रुसी दूर होती है। बालों का गिरना रुकता है। और बाल लंबे, काले, घने बनते है।

बालों के स्वास्थ्य के लिए निरंतर प्रयोग करें।

मात्रा – आवश्यकतानुसार.

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

डॉ. श्रुती वारंग
उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था
केशवसृष्टि, दूरभाष – ०२२-२८४५०७२०

केशवसृष्टी वनौषधि केंद्र

अपने केंद्र द्वारा निर्मित आयुर्वेदिक उत्पादनों का निरंतर प्रयोग करें। जिवनभर उत्तम स्वाथ्य का तथा आनंदमय जीवन का सुखभोग करें। इन उत्पादनों में प्रयोग की हुई अनेक काष्ठ औषधियों का उत्पादन भी अपने प्रकल्प में प्राकृतिक खाद् द्वारा किया जाता है।

विविध उत्पादनों की सूची

उत्तन वासाकुमारी सिरप
उत्तन रुदन्ती सिरप
उत्तन प्राश
उत्तन जास्वंद तैल
उत्तन ब्राम्ही-आँवला केश तैल
उत्तन रुमालीन तैल
उत्तन श्रवण तैल
ॲलोव्हेरा जैल
ॲलोव्हेरा क्रीम
त्रिफला चूर्ण
सितोपलादि चूर्ण
तालिसादि चूर्ण
हर्बोमाल्ट-एसव्ही
हर्बो-टी
डाईजिसॉल्ट

अधिक जानकारी के लिए हमे संपर्क करें।

उत्तन वनौषधी संशोधन संस्था
केशवसृष्टी, उत्तन गाँव, गोराई रोड, भाईन्दर पश्चिम,
पिन कोड : ४०११०६ जिला ठाणे, महाराष्ट्र.
दूरभाष : २८४५ ०७२०

आर्तानाम् दुःखनाशनम्

वक्तृत्व और संवादकुशलता

'वक्तृत्वकला और संवादकुशलता' इस प्रशिक्षण शिविर का आयोजन रामभाऊ म्हालगी प्रबोधिनी द्वारा किया गया था। प्रशिक्षण शिविर की अवधि दो दिन थी और यह २४-२५ जनवरी २००९ को प्रबोधिनी में ही संपन्न हुई थी। उपरोक्त शिविर में रामरत्ना विद्या मंदिर की ओर से श्री. गणेश फालके और श्री. परेश सोनिग्राइन दोनों को सहभागी होने का अवसर मिला।

आज के इस स्पर्धात्मक युग में वक्तृत्व, संवाद और प्रस्तुति को बहुत ही महत्त्व प्राप्त हुआ है। सामाजिक, राजकीय, सांस्कृतिक और शिक्षा आदि अनेक क्षेत्रों में अच्छे वक्तृत्व का होना आवश्यक हो गया है। इन चीजों को ध्यान में रखते हुए प्रबोधिनी ने इस शिविर का आयोजन किया था।

इस शिविर में समाज के लगभग सभी क्षेत्रों से आए हुए लोगों का समावेश था। जिसमें शिक्षक, डॉक्टर, वकील, पुलिसकर्मी, नाटक, प्रसारमाध्यम एवं राजनीति से जुड़े लोगों का सहभाग था।

शिविर में पुस्तकों/विषयों का चयन, गतिमानतासे कैसे पढ़े? उच्चारणशास्त्र, सभाओं में निवेदन, सूत्रसंचालन और भाषण कैसे करें, शरीरभाषा एवं संवादकुशलता इत्यादी विषयोंपर चर्चा हुई।

प्रारंभिक सत्र में श्रीमती मीना वैशंपायनजी ने कैसे पढ़े? इसकी चर्चा की। क्यों पढ़ना चाहिए? क्या पढ़ना चाहिए, पढ़ते वक्त किन चीजों की आवश्यकता है, पढ़ने के फायदे इत्यादि का उन्होंने विवरण दिया।

श्रीमती दीपा अत्रे जी ने पढ़ना अधिकाधिक गतिमान कैसे हो, इसके ऊपर मार्गदर्शन किया। 'उच्चारण शास्त्र' इस विषयपर नाट्य अभिनेता श्री. प्रमोद पवार जी ने अच्छी तरह से स्पष्ट किया। अच्छे वक्तृत्व के लिए आवाज और उच्चारण भी अच्छे होने चाहिए, इसलिए उन्होंने निरंतर अभ्यास पर जोर दिया और कुछ व्यायाम भी बताए।

दिन के आखरी सत्र में स्व. प्रमोद महाजनजी की 'भाषणकला' इस विषय की व्हिडियो रेकॉर्डिंग दिखायी गयी। इसमें उन्होंने कार्यकर्ताओं का 'भाषण' के विविध अंगो पर मार्गदर्शन किया था।

शिविर के दूसरे दिन श्री. मंदार भारदे जी ने भाषण कैसे करें, इस विषयपर लगातार दो सत्र लिए। जिसमें भाषण पूर्व तैयारी, अभ्यास, आवाज, पहनावा, विषयों का चयन, बोलते समय आनेवाली मुश्किलें इत्यादी मुद्दों का समावेश था। कुछ प्रशिक्षणार्थिओं के भाषण का व्हिडियो रेकॉर्डिंग करके, भारदेजी ने उनके बेहतर और कमजोर अंगों को बताया।

आखरी सत्र श्री. रविंद्र साठे जी ने लिया जिसका विषय था शरीरभाषा और संवादकुशलता। कुछ आकर्षक खेलोंद्वारा उन्होंने अपना विषय रखा। संवाद के प्रकार, संवाद के नियम, संवादों के विभिन्न अंग, आदि विषयों को उन्होंने स्पष्ट किया।

समापन सत्र में प्रबोधिनी के महानिदेशक श्री. विनय सहस्त्रबुद्धे व श्री. मिलिंद कोकजे जी उपस्थित थे। मिलिंदजीने पत्रकार के रूप में सुने हुए अच्छे वक्ताओं तथा उनके भाषणों को याद किया।

शिविर के दो दिन के कम अवधि में वक्तृत्व के सभी अंगों पर बेहतर मार्गदर्शन प्रशिक्षणार्थियों को प्राप्त हुआ। शिविर में शामिल मान्यवरों के अनुभवों का और उनके मार्गदर्शन का निश्चित लाभ, सभी प्रशिक्षणार्थिओं को अपने अपने क्षेत्र में अवश्य ही मिलेगा।

केशवसृष्टि में भारतीय हिंदू संस्कृति का अच्छा दर्शन होता है। यहां प्राकृतिक वातावरण में रहने का अवसर मिलता है। यहां की गोशाला हमें अधिक पसंद आई। श्री सामंत जो यहां के कृषि विद्यालय के प्राचार्य हैं, उन्होंने हमारा प्रबोधन, मार्गदर्शन करके, वनस्पतियों के बारे में बहुत उपयोगी जानकारी दी। हमें सभी कर्मचारियों का सहयोग मिला।

पी. डी. तलेले
शिशुविकास मंदिर हायस्कूल,
कुर्ला (प.), मुंबई - ७०

श्री गुरुजी : दृष्टि और दर्शन

गुणसंपदा और व्यावहारिकता

पूर्वपक्ष

कुछ लोग कह सकते हैं कि हम तो दुनिया में रहते हैं , उस सबका परिणाम हमारे ऊपर होता है, अतएव हमें तो व्यावहारिक दृष्टि से ही विचार करना चाहिए । ईश्वरभक्ति आदि जिन्हें करना है, वे सब उस क्षेत्र के अनुकूल विचार करें। कहना होगा कि यह विचार अपनी राष्ट्रचेतना के प्रतिकूल है ।

व्यावहारिक जीवन अत्यंत पवित्र हो

हमारे यहाँ तो व्यावहारिक जीवन के अंग-प्रत्यंग में पावित्र्य आदि गुणों का आह्वान भरा हुआ है । यही वर्णन मिलता है कि राज्यसत्ता चलानेवालों में इस प्रकार के गुण होने चाहिए और यदि वे इनसे संपन्न न हों तो जनता को उन्हें पदच्युत करने का अधिकार है । धनसत्ता का उपभोग करनेवाला, निर्माण करनेवाला यदि कृपण हो गया, उदार न रहा, दानी न रहा तो उसको चोर समझकर राजा ने दंड देना चाहिए । अपने श्रम से समाज का पोषण करनेवाला यदि अप्रामाणिक और उद्दंड हो गया तो वह भी दंड का भागी है। जो सबका ज्ञानदाता है, पावित्र्य इत्यादि आदर्शों को समाज के सामने रखने का जिस पर दायित्व है, वह यदि अपने लक्ष्य से च्युत हो गया , अभिमान करने लग गया , तो उसे चांडाल समझकर सबसे निकृष्ट स्थान पर बैठा देना चाहिए । इस प्रकार के स्पष्ट आदेश अपने यहाँ मिलते हैं , अर्थात् ऐहिक जीवन का प्रत्येक अंग अत्यंत पुनीत , पवित्र और शुचिर्भूत हो - इसी प्रकार की भावना हमारे मनीषियों की रही है ।

अध्यात्म व्यवहार के लिए

हमें यह भी समझना चाहिए कि आध्यात्मिक जीवन के गुण कोई ऐसे नहीं , जो आकाश में पतंगों की तरह उड़ते रहें और जिनका व्यवहार से कोई संबंध न हो। सच तो यह है कि आध्यात्मिकता के रूप में जो कुछ बताया, वह रोज के व्यवहार के लिए है । जो आत्मज्ञान से पुनीत है, वह अपने चारों ओर के जीव-जगत् को, निर्जीव को भी अपने समान समझते हुए भी सबके सुख की कामना और उसके लिए प्रयत्न करता हुआ व्यवहार करे, ऐसा ही कहा है । अत: ज्ञानी की व्याख्या भी 'सर्वभूतहिते रता:' - इन शब्दों से की है (गीता ५-२५ , १२-४)। सबमें अपने आप को जो देखता नहीं, जो सबके सुख के लिए छटपटाता नहीं, प्रयत्नशील होता नहीं, कष्ट करता नहीं, वह ज्ञानी नहीं । हमने राष्ट्र की प्रकृति को इन सब गुणों से ओतप्रोत किया है । हमारे लिए यह सब व्यवहार 'शास्त्र' है । हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि ऐहिक जीवन में तथाकथित पारमार्थिक बातों का हस्तक्षेप न होने दें। यह अपनी दृष्टि से और राष्ट्र की दृष्टि से ठीक नहीं है ।

व्यवहार में सत्यकी अनिवार्यता

हम केवल ऐहिक दृष्टि से विचार करके देखें । यदि एक-दूसरे के शब्द पर विश्वास न हो , तो दो मानवों का परस्पर व्यवहार चल नहीं सकेगा । इस विश्वास को ठीक प्रकार से निभाने के लिए, अपने मन में आनेवाले विचार, भावनाएँ और मुँह से निकलनेवाले शब्द तथा शरीर से होनेवाली कृति, इन सबमें सामंजस्य रखकर ही एक-दूसरे के साथ व्यवहार करना पड़ता है । इसको ही सत्य बोलते हैं। सत्य भगवान का नाम है । संपूर्ण जगत्में वही अनुस्यूत है। व्यवहार में भी वह कितना आवश्यक है, यह हम रोज के जीवन में देख सकते हैं ।

गुणसंपदा से जीवन चरितार्थ करें

पारमार्थिक , अत: अव्यवहार्य ऐसा सोचना उचित नहीं । इसलिए हम लोग कहते हैं कि जितने सिद्धांतरूप श्रेष्ठ गुण अपने यहाँ बताए हैं, उन सबको अपने दिन-प्रतिदिन के जीवन में चरितार्थ कर, अपने इस राष्ट्र के लिए एक विशुद्ध, धर्मप्रवण, शुचिर्भूत एवं नित्य राष्ट्र सेवा में संलग्न ऐसी बृहत् समाजव्यापी शक्ति आज अपने को व्यवहार में लाने का प्रयत्न करना है। इस हेतु अपने व्यक्तिगत जीवन को हम अधिकाधिक ध्यान देकर निर्माण करें ।

वास्तविक रीति से हम जितना समय भिन्न-भिन्न प्रकार की समाजरचना, आर्थिक रचना, राज्यरचना इत्यादि विषयों पर विचार करने में लगाते हैं , उसका आधा या चौथाई भी समय यदि हमने इस विशुद्ध चरित्र एवं विशुद्ध वायुमंडल तथा शुचितासंपन्न शक्ति के निर्माण में लगाया तो मैं समझता हूँ कि ऐहिक जीवन के संकटों से जो चिंता हमें लग गई है, उससे मुक्त होने का तथा अपने राष्ट्र के वैभव के दिन देखने का अवसर हमें बहुत जल्दी प्राप्त होगा ।

■

जीवन की प्रयोगशाला : वानप्रस्थाश्रम

श्रीमती मंजु - सुरेश कुमार महावीर प्रसाद पुरोहित

सच तो यह है कि ५० वर्ष के ऊपर की आयु का यह समय यूं ही बिताने के लिए नहीं होता। अपितु यह (वानप्रस्थाश्रम) जीवन के सबसे मूल्यवान समय को स्वर्णिम बनाकर, परमात्मा के चरणों में आनंदमग्न होकर दिव्य आलोक पाने के लिए एक सुंदर प्रयोगशाला है; जहां हम अपने जीवन के दिव्य प्रयोग करके नव्यता और दिव्यता प्राप्त करते हैं।

यूं तो घर को भी आश्रम कहा जाता है। मानव सेवा के संकल्प को दृढ करने के लिए एक विशिष्ट पवित्र जागृत स्थान की आवश्यकता होती है। आज के संदर्भ में उसको ही आश्रम कहा जाता है। जहां जीवन तीर्थ बने, उल्लास का पर्व बने, जहां बैठकर, साधक, ज्ञान, ध्यान, जप, तप, सेवा साधना के क्षितिज छू सकें।

मैं सुरेश पुरोहित यहां श्री किसनगोपाल राजपुरिया वानप्रस्थाश्रम में १४-१२-०८ दिसंबर को मेरी पत्नी श्रीमती मंजु पुरोहित के साथ रहने के लिए आया।

हमने इस वानप्रस्थाश्रम के बारे में तीन साल पहले समाचारपत्र में पढा था तब से मेरे मन में यहां आने का निश्चय किया। मैं मालाड में रहता था, वहां मैं कैटेरिंग के क्षेत्र में काम करता था। मेरी एक बेटी है, उसकी शादी होकर वह ससुराल में रहती है। मुंबई की भागदौड़ की जिंदगी में बहुत साल गुजारे। इस भागदौड़ में स्वास्थ्य की तरफ से ध्यान हट गया था। बहुत ईलाज करने के बाद भी स्वास्थ्य में आवश्यक परिवर्तन नहीं हो रहा था। फिर मन में ठान लिया कि शहर का चंद लमहो का सुख छोड़ के वानप्रस्थाश्रम में आये।

यहां आने के बाद ऐसे लगा मानो कि नयी सुंदर सी जिंदगी शुरू हो गयी, यहां के लोग मानो एक ही परिवार के लोग हैं, पर्यावरण बहुत स्वच्छ और सुंदर हिल्स स्टेशन की तरह है। रोज शिवालय मंदिर में जाने से मन शुद्ध और पवित्र आनंदमय होता है। इस्कोन मंदिर से श्री राधागोपीनाथजी के मंदिर से तीन प्रभुजी सत्संग कराने आते है। प्रभुजी अल्टरनेट मंगलवार को आते है। प्रभुजी भगवतगीता के प्रवचन, और महामंत्र का कीर्तन करवाते है -

हरे कृष्णा, हरे कृष्णा, कृष्णा कृष्णा हरे हरे,
हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे।

दो घंटे का सत्संग करवाते है। बहुत आनंद मिलता है। इस में ऐसा लगता है कि मंदिर में रोज सत्संग होना चाहिए ।

हम पति पत्नी उसी दिन से सुबह शाम करते है ओ करवाते है। सुबह १० बजे भगवत गीता और भजन महामंत्र कीर्तन और शाम को ५ बजे तक सुखसागर भगवतगीता, भजन, महामंत्र कीर्तन करते है। वानप्रस्थाश्रम के कुछ लोग इकट्ठे होते है। ओर बहुत आत्मानंद मिलता है।

यहां का भोजन बहुत सात्विक और अच्छा है। यहां के मॅनेजर (वानप्रस्थाश्रम) के श्री परेश देशपांडे जी बहुत शांत ओ अच्छे स्वभाव के है, यहां पर जब श्री योगेंद्र जी राजपुरिया आये थे, सबसे मिले, उनसे मिल के बहुत अच्छा लगा,

मैं यही बताना चाहता हूं कि खुदा को यह मत बतलावो कि मेरी तकलीफ कितनी बड़ी है। तकलीफ को यह बतलाओ की खुदा मेरा कितना महान है। मैं सभी भाई, बहनों, से प्रार्थना करता हूं कि जीवन के इस मोड़पर आपको हारते और टूटते देखना घबराए, बस अपने जीवन की दिशा इस ओर मोड़कर एक नई राह अपने जीवन में लाये।

भगवान से प्रार्थना करो कि हे, भगवान, हमारा हर कर्म सुकर्म बन जाये और जब तक जिन्दा रहे, न किसी का बुरा करे, न बुरा सोचें, ये हाथ सदा सहायता के लिए उठते रहे, सहायता मांगे नहीं। जिंदगी के अंतिम क्षण तक सुकर्म करते रहे यही इच्छा है। भगवान स्वीकार करें।

अंत मैं यह ही कहूंगा कि वानप्रस्थाश्रम में आने के बाद मेरी एलोपेथीक दवाईयां बंद हो गई। मुझे रात में बराबर नींद आती है। मुझे कभी कभी चक्कर आते थे, वो नहीं आते है। मैं अपने आपको यहां पर (वानप्रस्थाश्रम) में स्वस्थ और ताजा महसूस कर रहा हूं। दो साल से बीमार था मानसिक तकलीफ थी। वह भी यह वानप्रस्थाश्रम में आने के बाद दूर हो गई, आनंद आया। यहां पर प्राकृतिक सौंदर्य में एक दम स्वस्थ हो गया हूं। अब तो मेरा मन यही रहने को करता है। यहां (वानप्रस्थाश्रम) के सभी कर्मचारी गण, बड़े बुजुर्गों की सेवा में तत्पर रहते हैं। इन सभी को मेरी पूरे घरवालों की तरफ से धन्यवाद! ▪

श्रम का फल

मेहनत का अर्थ है कष्ट उठाकर या झंलकर भी काम पूरा करना, लगन से काम करना, पुराने लोगों ने कहा है 'मेहनत करो, जिंदगी की झोली खुशियों से भरो। मेहनत करो, भागती हुई जिंदगी के साथ चलना सिखो। मनुष्य की यह है पहचान - श्रम का फल मीठा होता है। भगवान के यहा श्रम के बारे में देर है --- अंधेर नहीं।

श्रम का अर्थ है - मेहनत। अपना काम लगन और ईमानदारी से करना ही सफलता की कुंजी है। श्रम के पौधे पर ही सफलता का फूल खिलता है। श्रम ही ईश्वर की पूजा है श्रम ही सच्ची साधना होती है। खेत में काम करनेवाला किसान हो या मजदूर इसी श्रम से सबका पेट भरता है। चालक श्रम से ही बस के रेलगाडी, विमान या मालमोटार गाडी- इसी से चलते हैं।

विद्यार्थी श्रम करके ही विद्या और योग्यता प्राप्त करते है। अस्पतालों में डॉक्टर, नर्स का श्रम ही रोगियां को नया जीवन देता है। श्रम के बल पर ही मनुष्य विज्ञान में आगे बढ़ा है और चांद पर पहुंच सका है। श्रम करके कलाकारों ने अद्‌भुत कला की सृष्टि की है। खेल खेल में प्यार बढ़ता है। आलसी और कामचोर मनुष्य बिना सींग और पूंछ का पशु ही है। ऐसा आदमी धरती पर भार के समान है। घर, परिवार, समाज और राष्ट्र के जीवन में उसका कोई योगदान नहीं है। श्रम से जी चुरानेवाले ही चोर और ढग बनने है। ऐसे लोग समाज पर कलंक है।

श्रमही मनुष्य का भाग्यविधाता है। परिश्रमी के पास सारे सुख सारी सफलता खुद दौड़कर आती है। लगातार श्रम करने से असफलता भी सफलता में बदल जाती है। शास्त्रज्ञ हो या नेता आदि श्रम करके ही सामान्य व्यक्ति से महापुरुष बनते है। श्रम वह पारसमणि है, जिसे छूकर साधारण आदमी भी लोहे से सोना बन जाता है।

श्रम और आपस में सहयोग के कारण मनुष्य के जीवन में चार चांद लग जाते है। सचमुच मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति का मूलमंत्र है श्रम।

सच कहे तो श्रम/मेहनत ही जीवन है। सद्य शिक्षण में श्रम को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। और यह सच है कि भारत का नवनिर्माण श्रम पर ही होगा।

प्रा. माधव फकिरा माळी
कृषि सहाय्यक
केशवसृष्टि कृषि तंत्र विद्यालय

केशवसृष्टि समाचार

यह एक पंजीकृत मासिक पत्रिका है, जिसका संस्करण राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित होता है। यह मासिक पत्रिका गत सात साल से प्रकाशित हो रही है। इसमें आप पायेंगे केशवसृष्टि संस्था की दैनंदिन गतिविधियाँ, आयुर्वेद, कृषि, गौसम्पदा, शिक्षण एवं सामाजिक प्रबोधन पर आधारित लेख।

सदस्यता फॉर्म

संपादक
केशवसृष्टि समाचार,
केशवसृष्टि, उत्तन-भाईंदर (प.),
जि. ठाणे - ४०१ १०६ दूरभाष :-(०२२) २८४५०२४७, २८४५२८५५

मैं केशवसृष्टि समाचार इस मासिक पत्रिका का ग्राहक बनना चाहता/चाहती हूँ।

मैं इसके लिए रु. .... मनीऑर्डर द्वारा संलग्न कर रहा/रही हूँ।

*(कृपया मनीऑर्डर '**केशवसृष्टि समाचार**' के नाम जारी करें।)*

केशवसृष्टि समाचार के लिए सदस्यता दर
मासिक ५ रू., वार्षिक ५० रु.

नाम ....

पता ....

....

दूरभाष/मोबाईल..

हस्ताक्षर

ध्येयवाद और सामाजिक बंधुत्व

समाज मन अर्थात् समाज की सामुहिक भावना कोई भी व्यक्ति, फिर चाहे वह छोटा हो या बड़ा, सुशिक्षित हो अथवा अशिक्षित ग्रामीण हो या शहरी, स्वयं में वह कितना ही पूर्ण हो, फिर भी उस पर हुए अनेक कर्जों में से एक भावनात्मक कर्ज समाजऋण या समाज का कर्ज है। इस समाज में हमारे पारंपारिक जीवन जगत को समाज संघटन से प्रबोधन से विकास की ओर ले जाने की इच्छा रखनेवाले अनेक कार्यकर्ता अनेक नामों एवं रूप में आते हैं। ऐसे ही प्रबोधन की लगन लिए हुए श्री नियंता देशपांडे (अंकगणितज्ञ) ने १२वीं तक की शिक्षा प्राप्त करने के बाद जापानी भाषा की शिक्षा ली और उसका अभ्यास किया। जापान देश में जाकर सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आठ वर्ष तक काम किया। काम करते हुए उन्होंने अनेक संस्थाएं शुरु की और उनके माध्यम से शिक्षा और समाज इन दोनों को एक संगठन में लाने का प्रयत्न किया। वह समस्याओं के समाधान भी ढूंढ निकालते है। उन्होंने जनवरी २००७ में जापानी भाषा में तीन कामिक्स लिखे। वह इस समय भारतीय तत्वज्ञान (दर्शन) पर आधारित पुस्तकों को जापानी भाषा में लिखने का काम कर रहे हैं। मराठी भाषा पर उनका प्रभुत्व, यह एक सराहनीय गुण/कला उनके पास देखने को मिलता है।

इस प्रकार के प्रतिष्ठित तत्ववेत्ता ने केशवसृष्टि तंत्र विद्यालय का ७ जनवरी २००९ को दौरा किया। सबसे पहले केशवसृष्टि प्रकल्प के मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री अभयजी फणसेकर ने पुष्पगुच्छ देकर उनका स्वागत किया। इस अवसर पर उत्तन कृषि संशोधन संस्था के कार्यवाह (सचिव) श्री प्रकाश जी राजाध्यक्ष, प्राचार्य श्री सदानंद सामंत, एवं अन्य आचार्य, कर्मचारी, और छात्र-छात्रों को व्यक्तित्व विकास पर आधारित व्याख्यान, ''ध्येयवाद और सामाजिक बंधुत्व'' दिया। व्याख्यान देते हुए उन्होंने पहले अपना परिचय दिया, फिर शिक्षा की हलचल, प्रतिदिन चेहरे पर झलकने वाले हास्य, महत्त्व के टिप्स देकर विद्यार्थियों को प्रभावित किया। उन्होंने शून्य में से मनुष्य का विकास कैसे होता जाता है, प्रसिद्ध सिने निर्देशक एवं लेखक सत्यजीत रे की जीवन यात्रा और अनके द्वारा आतंकवाद और अन्याय पर आधारित तैयार किए गए चित्रपटों (सिनेमाओं) की जानकारी दी। 'किसी भी व्यक्ति द्वारा कोई भी काम हाथ में लेने के बाद, 'मुझे जमेगा नहीं', 'मैं यह नहीं कर सकता', मुझे आता नहीं' ऐसे बहाने न करने के प्रयत्न करने की आवश्यकता है (अर्थात जब कोई व्यक्ति कोई काम हाथ में ले लेता है तो उसे मेरे अनुकूल नहीं होगा, 'मैं यह नहीं कर सकता, मुझे आता नहीं, ऐसे बहाने करने से बचना चाहिए।) स्वप्न देखना बुरा नहीं है, वे साकार कब होंगे यह भी बताया नहीं जा सकता। किन्तु अधिकतम प्रयत्न करने, परिश्रम करने पर कार्य के फल, विलंब से क्यों न होंस किंतु मिलते अवश्य हैं, ऐसी आशा रखनी चाहिए। प्रसिद्ध विचारक हैनरी फोर्ड की - "If you think to can or you cannot you your right" पर यदि तुमने विचार किया तो तुम भी पा सकते हो या तुम पा नहीं सकते या जो तुम कह रहे हो वह ठीक हैं, ऐसा विचार आता है, वर्तमान परिस्थिति देखते हुए समाज की आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक प्रगति हो रही है, इस समाज का, तुम्हारा हमारा हाथ भर लगते ही विकास का ध्येय प्राप्त हो सकता है। २१वीं सदी में भारत महासत्ता (महाशक्ति) अवश्यमेव बनेगा। सामाजिक बंधुत्व ने समाज सेवा का यह शिवधनुष्य प्रत्येक ने यदि मन मस्तिष्क में बिठाकर उठाया तो समाज की उन्नति होने में विलंब नहीं होगा।

इसके बाद श्री नियंता देशपांडे का आभार व्यक्त करने के बाद कार्यक्रम का समारोप किया गया।

श्री. नियंता देशपांडे

उत्तन कृषि संशोधन संस्था
कृषि विषयक आढावा

वनौषधी - अश्वगंधा लागवड, शतावरी, नागरमोथा, कडु किरायत, वाळा, तुळस-प्रक्रिया केंद्रास काढणी करून दिली. पालक भेंडी, गवार, लागवड

आंबा बाग - निमार्क व गोमूत्र फवारणी, साफ सफाई व खरपतवार निर्मूलन काम करण्यात आले. अयोग्य हवामानामुळे मोहोरे ठशीरात येण्याची शक्यता.

नारळ बाग - निमार्क व गोमूत्र फवारणी पूर्ण, शेणखत व मातीची भर देऊन पूर्ण

भाजीपाला - दुधी, कारली, नवलकोल, मुळा, पालक, गवार, मिरची, भाज्यांची विक्री सुरु आहे. काकडी, फ्लॉवर उत्पादन सुरु होण्यास उशीर आहे.

Book your space today

KESHAV SRUSHTI SAMACHAR

Special Advertisement Package. (Annual)

ADVERTISEMENT RATES (For General issuesonly)

		Monthly		Yearly	
	Size	**B/W**	**Colour**	**B/W**	**Colour**
Full Page	22 x 15 cm.	5000/-	10000/-	45,000/-	96,000/-
Half Page	11 x 15 cm.	3000/-	5000/-	28,800/-	45,000/-
Inside Cover	22 x 15 cm.	--------	10,000/-	---------	96,000/-
Back Cover	18 x 15 cm.	--------	15,000/-	---------	1,44,000/-
Page Sponsor	03 x 15 cm.	2000/-	-----------	24,000/-	

KESHAV SRUSHTI SAMACHAR
Advertisement ORDER FORM

Date :

To,
Keshav Srushti Samachar,
Keshav Srushti, Uttan,
Bhayandar (W) Dist: Thane - 401 106
Tele: 022-28450247/28452855

Dear Sir,
We hereby confirm the booking for Advertisement space in your above magazine for the

issue ____________ OR from ____________ to ____________

Size ____________ Type ____________ Rate ____________

Material : ____________

Payment Terms : ____________

Thanking you,
Yours faithfully,

seal & signature of authority

Company's Name, Address

Order Executed By : ____________

Remark : ____________